भारत में सामाजिक आन्दोलन

Social Movement in India

डी. एस. बघेल
किरण बघेल

कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल

D:/SMJ-II/1511-IND.PM5 BUTTER DATE : 04.03.2009 (RAJENDRA/AKS)

भारत में सामाजिक आन्दोलन
[SOCIAL MOVEMENTS IN INDIA]

लेखक

डी.एस. बघेल

एम.ए.,पी-एच.डी

पूर्व आचार्य एवं विभागाध्यक्ष: समाजशास्त्र

बोदा रोड, सिविल लाइन्स, रीवा (म.प्र.)

एवं

श्रीमती किरण बघेल

एम.ए.,पी-एच.डी.

प्राध्यापक समाजशास्त्र

नेहरू स्मारक महाविद्यालय, चाकघाट (रीवा) म.प्र.

कैलाश पुस्तक सदन,भोपाल

❑ *प्रकाशक :*
कैलाश पुस्तक सदन
हमीदिया मार्ग, भोपाल - 462 001
फोन : (0755) 2535366, 4256804.

❑ *संस्करण :* 2009

❑ *मूल्य :* 250/- *रुपये*

❑ *लेज़र टाईप सेटिंग :*
ट्रांस लेज़र, भोपाल

❑ *मुद्रक :*
वैल प्रिंट्स प्रा. लि., भोपाल

- *All Rights Reserved. No Part of this Publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means without prior written permission of the publishers.*
- *While due care and diligence was taken in editing and printing of this book, neither the author nor the publisher nor the printer of this book holds any responsibility for any mistake that might have inadvertently crept in.*

दो शब्द

सोपान क्रम जीवजनित प्रक्रिया है। मानव तो अन्य जीवधारियों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। मानव समाज में सोपान क्रम का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितना मानव समाज का इतिहास। आदिकाल से आज तक मानव समाज में अस्तित्व के लिए संघर्ष का देवासुर संग्राम निरन्तर जारी है। काल और परिस्थितियों के कारण इस देवासुर संग्राम की प्रकृति और प्रकारों में परिवर्तन हो रहे हैं। दुनिया का ऐसा कोई भी समाज नहीं है, जहाँ मानव अस्तित्व का संग्राम न हो और समाज में पूर्ण समानता और समरसता हो। मानव में जहाँ एक ओर उदात्त दैवी शक्तियाँ हैं, वहीं दूसरी ओर उसके अधःपतन की अतल गहराइयाँ भी हैं। यही कारण है कि प्रारम्भ से लेकर आज तक के समाजों में असमानता, भेदभाव, ऊँच-नीच की गहरी खाइयाँ हैं।

मानव चिन्तनशील प्राणी है। उसकी चिन्तनशीलता का ही परिणाम है कि वह निरन्तर समाज की खाइयों को पाटने का प्रयास करता रहा है। यह प्रयास व्यक्तिगत और संस्थागत दोनों प्रकार का हो सकता है। दुनिया के प्रायः सभी हिस्सों में ऐसे अनेक विचारक पैदा हुए हैं जिन्होंने समाज की बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया है तथा समाज में समानता और समरसता के वातावरण को निर्मित करने का प्रयास किया है। इन्हीं सामूहिक प्रयासों को जन संस्थागत स्वरूप प्रदान किया जाता है, तो ये प्रयास एक आन्दोलन का स्वरूप ले लेते हैं। भारत में व्याधा इन्हीं कुरीतियों को दूर करने के लिए किए गए प्रयासों को सामाजिक आन्दोलन कहा जाता है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए जो प्रश्नपत्र निर्धारित किए गए हैं, उनमें 'भारत में सामाजिक आन्दोलन' भी एक है। अभी इस क्षेत्र में जो पुस्तकें उपलब्ध हैं, उनमें भारत में सामाजिक आन्दोलन के सभी पहलुओं को समाहित नहीं किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से इस कमी को दूर करने का प्रयास किया गया है। पुस्तक के इस प्रथम संस्करण में अनेक कमियों का होना नितान्त स्वाभाविक है। ज्ञान निरन्तर प्रवाह की एक प्रक्रिया है, जो न रुकी है और न आगे ही रुकेगी। हम आशान्वित है अपने विद्वान प्राध्यापकों और जिज्ञासु पाठकों से, जो इस पुस्तक की कमियों से हमें निरन्तर प्रोत्साहित और निर्देशित करते रहेंगे। हम आपको विश्वास दिलाना चाहते हैं कि आपके प्रोत्साहन और निर्देशों के अनुसार पुस्तक को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का निरन्तर प्रयास करते रहेंगे।

● डी.एस. बघेल
● श्रीमति किरण बघेल

विषय सूची

अध्याय		पृष्ठ क्रमांक
(1)	सामाजिक आन्दोलन की अवधारणा *(Concept of Social Movement)*	01
(2)	सामाजिक आन्दोलन के कार्य *(Functions of Social Movement)*	06
(3)	सामाजिक आन्दोलन के स्वरूप *(Forms of Social Movements)*	13
(4)	सामाजिक आन्दोलन की उत्पत्ति के कारक *(Factors of origin of Social Movement)*	18
(5)	सामाजिक आन्दोलन में नेतृत्व की भूमिका *(Role of Leadership in Social Movement)*	27
(6)	वर्ग एवं जाति *(Class and Caste)*	33
(7)	भारत की प्रजातियाँ *(Races of India)*	59
(8)	दलित *(Dalit)*	79
(9)	भारत में राजनैतिक प्रक्रियाएँ *(Political process in India)*	85
(10)	नेतृत्व एवं गुट *(Leadership and Factions)*	101
(11)	समाज में शक्ति का वितरण *(Distribution of Power in Society)*	109
(12)	राजनैतिक व्यवस्था एवं समाज में अन्तःसम्बन्ध *(Inter-relationship in Society and Political system)*	129
(13)	समाज सुधार आन्दोलन *(Social Reform Movements)*	135
(14)	भारतीय धार्मिक उदारवादी आन्दोलन *(Indian Religious Protestant Movements)*	143

(15) भक्ति सम्प्रदाय और सुधार आन्दोलन 155
(Bhakti cults and Reform Movements)

(16) भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन 163
(Indian Freedom Movements)

(17) कांग्रेस एवं स्वतंत्रता आन्दोलन 167
(Congress and Freedom Movements)

(18) भारत में कृषि 173
(Agriculture in India)

(19) हरित क्रान्ति 183
(Green Revolution)

(20) किसान आन्दोलन 187
(Peasants Movements)

(21) लिंगभेद एवं महिलावादी आन्दोलन 199
(Gender and Feministic Movements)

(22) जनजातीय आन्दोलन 207
(Tribal Movements)

(23) भू-दान एवं सर्वोदय आन्दोलन 216
(Bhoodan And Sarvodaya Movements)

(24) श्रम संघ 225
(Trade Union)

(25) जनांकिकीय प्रवास 232
(Demographic Migration)

(26) पर्यावरणीय प्रदूषण 251
(Environmental Pollution)

●●●

1

सामाजिक आन्दोलन की अवधारणा

[CONCEPT OF SOCIAL MOVEMENT]

आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं में सामाजिक आन्दोलन की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत एक विकासशील देश है, अत: सामाजिक आन्दोलन का प्रभाव यहाँ अधिक है। प्रत्येक समाज में सामाजिक आन्दोलन निरन्तर चलते रहते हैं। स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान देश में राजनीतिक आन्दोलन के साथ ही सामाजिक आन्दोलन भी क्रियाशील थे। आज भारत में सामाजिक आन्दोलन का प्रवाह जिन धाराओं में हो रहा है, उनका विवरण इस प्रकार है–

(अ) पिछड़े तथा अल्पसंख्यक वर्ग का सुधार,

(आ) प्रबन्ध में श्रमिकों की भागीदारी,

(इ) स्त्री तथा प्रौढ़ शिक्षा,

(ई) छात्र आन्दोलन एवं युवा तनाव,

(उ) गरीबी हटाओ,

(ऊ) जनजातीय आन्दोलन आदि।

यहाँ मूल प्रश्न यह पैदा होता है कि सामाजिक आन्दोलन क्यों? समाज में आन्दोलन की आवश्यकता क्यों पड़ती है? इस प्रश्न के दो उत्तर हैं –

प्रथम – सामाजिक आन्दोलन का उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था में ऐसे संशोधन और परिवर्तन से है जो वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक है।

द्वितीय – सामाजिक आन्दोलन इसलिए भी आवश्यक हो जाते हैं कि शासन केवल आन्दोलन की भाषा ही जानता है।

सामाजिक आन्दोलन विकासशील देशों की अनिवार्य आवश्यकता है। इसकी सहायता से समाजवादी समाज के निर्माण में मदद मिलती है, साथ ही प्रगतिशील उद्देश्य की पूर्ति होती है। यही कारण है कि सामाजिक आन्दोलन का प्रभाव सार्वभौमिक होता है।

सामाजिक आन्दोलन की परिभाषा
(Definitions of Social Movement)

सामाजिक आन्दोलन जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, एक ऐसा सामूहिक प्रयास है जिससे एक नई सामाजिक व्यवस्था का जन्म होता है। इस सामाजिक व्यवस्था को वांछनीय व्यवस्था के नाम से जाना जा सकता है। सामाजिक आन्दोलन की परिभाषा के सम्बन्ध में कुछ विचारकों के मत निम्न हैं–

(1) **ब्लूमर** – "सामाजिक आन्दोलन एक ऐसा सामूहिक प्रयत्न है जिससे जीवन की एक नई व्यवस्था निर्मित होती है।"

(2) **किंग** – "सामाजिक आन्दोलन एक ऐसा सामूहिक प्रयत्न है, जिससे व्यवस्थित प्रयत्न द्वारा विचारों, व्यवहारों और सामाजिक सम्बन्धों में उचित परिवर्तन सम्भव हो पाता है।"

(3) **टाच** – "अधिकांश व्यक्तियों द्वारा वह प्रयत्न है जिससे कि वे अपने सामूहिक प्रयत्नों द्वारा सामान्य समस्याओं का समाधान कर सकें।"

(4) **मैकमिलन** – "सामूहिक आन्दोलन एक ऐसा सामूहिक प्रयास है जिससे कि जीवन की नई व्यवस्था का श्रीगणेश सम्भव हो पाता है।"

(5) **एण्डरसन और पार्कर** –"हम एक सामाजिक आन्दोलन को गत्यात्मक सामूहिक व्यवहार के रूप में परिभाषित कर सकते हैं जो समय के साथ-साथ एक संरचना विकसित कर लेता है और जिसका उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था में पूर्ण या आंशिक संशोधन होता है।"

(6) **कैमरान** – "सामाजिक आन्दोलन तब होते हैं, जब बड़ी संख्या में लोग विद्यमान संस्कृति या सामाजिक व्यवस्था में किसी भाग को परिवर्तित करने अथवा उसके स्थान पर दूसरी व्यवस्था को स्थापित करने के लिए एक साथ बँध जाते हैं।"

(7) **टर्नर और किलियर** – "एक सामाजिक आन्दोलन को एक समाज अथवा एक समूह, जिसका कि वह भाग है, के अन्तर्गत कुछ निरन्तरता में परिवर्तन उत्पन्न करने या एक परिवर्तन को रोकने के लिए सामूहिक व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

(8) **मैरिल और एल्ड्रिज** – "सामाजिक आन्दोलन रूढ़ियों में परिवर्तन के लिए अधिक या कम मात्रा में सामूहिक प्रयास को कहते हैं।"

(9) **एम.एस.ए. राव** – "एक सामाजिक आन्दोलन समाज के एक भाग द्वारा समाज में पूर्ण अथवा आंशिक परिवर्तन लाने के उद्देश्य से किया गया सामूहिक प्रयास है जिसमें एक विचारधारा पर आधारित गतिशीलता होती है।"

(10) **थियोडोरसन** – "सामाजिक आन्दोलन सामूहिक व्यवहार का एक महत्वपूर्ण स्वरूप है जिसमें परिवर्तन लाने या उसका विरोध करने में सहयोग देने के लिए लोगों को बड़ी संख्या में संगठित या जागरूक किया जाता है।"

(11) **रोज** – "सामाजिक आन्दोलन सामाजिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लोगों की एक बड़ी संख्या के अनौपचारिक संगठन को कहते हैं।"

(12) **डॉ. भीमराव अम्बेडकर** – "सही वक्त पर गलत बात का विरोध ही सच्चा सामाजिक आन्दोलन कहलाता है।"

(13) **महात्मा गाँधी** – "सामाजिक आन्दोलन समाज की वे अभिव्यक्तियाँ हैं जिनसे यह निर्धारित होता है कि समाज की दृष्टि में गलत तथा सही की परिभाषा क्या है।"

इन परिभाषाओं को ध्यान में रखते हुए सामाजिक आन्दोलन को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि, "**सामाजिक आन्दोलन एक ऐसा सामूहिक प्रयास है जिससे एक नई सामाजिक व्यवस्था अवतरित होती है। यह प्रयास अल्पकालीन अथवा दीर्घकालीन दोनों ही प्रकार का हो सकता है।**"

सामाजिक आन्दोलन की विशेषताएँ
(Characteristics of Social Movement)

सामाजिक आन्दोलन की विशेषताओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–

(अ) विशिष्ट विशेषताएँ और

(आ) सामान्य विशेषताएँ।

विशिष्ट विशेषताओं के अन्तर्गत विशिष्ट विद्वानों ने सामाजिक आन्दोलन की जो विशेषताएँ बतायी हैं, उनका उल्लेख किया जायेगा तथा सामान्य विशेषताओं के अन्तर्गत समग्र रूप से सामाजिक आन्दोलन की विशेषताओं का उल्लेख किया जायेगा। ये दोनों विशेषताएँ निम्न हैं–

सामाजिक आन्दोलन की विशिष्ट विशेषताएँ *(Special Characteristics of Social Movements)*

(1) **डॉ. एस.पी. सहाय** –

(अ) सामाजिक आन्दोलन शीघ्र परिवर्तन की इच्छा से किया जाने वाला प्रयास है।

(आ) सामाजिक आन्दोलन का यह दायित्व होता है कि घटित हो रहे परिवर्तनों को एक निश्चित दिशा प्रदान करे।

(इ) सामाजिक आन्दोलन सामाजिक गतिशीलता का द्योतक होता है।

(ई) कोई भी आन्दोलन एक समय में एक ही प्रकार की विचारधारा से निर्देशित होता है।

(उ) सामाजिक आन्दोलन जीवन तथा समाज के किसी भी पक्ष से सम्बन्धित हो सकता है।

(2) **पी.एन. मुकर्जी** – पी.एन. मुकर्जी ने अपनी पुस्तक *(Social Movement and Social Change)* में सामाजिक आन्दोलन की निम्न चार विशेषताओं का उल्लेख किया है–

(अ) यह सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित होता है।

(आ) यह परिवर्तन समर्थक और विरोधी दोनों ही हो सकता है।

(इ) सामाजिक आन्दोलन सामाजिक संरचना का परिणाम होता है।

(ई) सामाजिक आन्दोलन का एक लक्ष्य होता है।

(3) **डॉ. राव** – डॉ. राव ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के आधार पर सामाजिक आन्दोलन की चार विशेषताओं का उल्लेख किया है–

(अ) सामाजिक आन्दोलन के कारण समाज में संरचनात्मक परिवर्तन होता है।

(आ) सामाजिक आन्दोलन की प्रकृति सुधारवादी होती है।

(इ) सामाजिक आन्दोलन का स्वरूप प्रायः रूपान्तरकारी होता है और

(ई) सामाजिक आन्दोलन का परिणाम क्रान्ति के रूप में भी होता है।

सामाजिक आन्दोलन की सामान्य विशेषताएँ (General Characteristics of Social Movement)

(1) **सामाजिक परिवर्तन** (Social Change) – सामाजिक आन्दोलन की पहली विशेषता सामाजिक परिवर्तन है। परिवर्तन के अभाव में किसी भी समाज में आन्दोलन की कल्पना नहीं की जा सकती है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। जिस समाज में परिवर्तन की गति तीव्र होती है, उस समाज में आन्दोलन के लिए सशक्त पृष्ठभूमि का निर्माण होता है।

(2) **एक संगठन** (An Organization) – सामाजिक आन्दोलन का स्वरूप संगठनात्मक होता है अर्थात् सामाजिक आन्दोलन का एक ढाँचा होता है। इस ढाँचे का एक निश्चित संगठन होता है। कोई भी सामाजिक आन्दोलन संगठन के अभाव में नहीं चल सकता है।

(3) **कार्यात्मक व्यवस्था** (Functional System) – सामाजिक आन्दोलन का एक क्रियात्मक स्वरूप भी होता है। इस स्वरूप के द्वारा किस क्रिया का सम्पादन कब करना है, इसका निर्धारण किया जाता है। क्रियात्मक स्वरूप के कारण सदस्य क्रियाओं को करने के लिए प्रेरित तथा निर्देशित होते हैं। सामाजिक आन्दोलन में सदस्य जिन क्रियाओं का सम्पादन करते हैं, वे पहले से निर्धारित तथा व्यवस्थित होते हैं।

(4) **सामुदायिक भावना** (Community Sentiment) – सामाजिक आन्दोलन में जो सदस्य भाग लेते हैं, उनमें सामुदायिक भावना पायी जाती है। सभी सदस्य अपने को एक ही समुदाय का समझते हैं। इसका कारण यह है कि सभी सदस्य एक ही प्रकार का व्यवहार करते हैं तथा विचारधारा रखते हैं।

(5) **मूल्य व्यवस्था** (Value System) – सामाजिक आन्दोलन में जो सदस्य भाग लेते हैं, उनमें सामान्य मूल्यों के प्रति श्रद्धा होती है। सभी सदस्यों का व्यवहार निश्चित मूल्यों द्वारा निर्देशित तथा संचालित होता है।

(6) **नेतृत्व** (Leadership) – सामाजिक आन्दोलन के संचालन के लिए नेतृत्व अनिवार्य है। नेतृत्व के अभाव में सामाजिक आन्दोलन का संचालन अत्यन्त ही कठिन कार्य है। सभी सदस्य नेतृत्व की आज्ञा का पालन करते है। सामाजिक आन्दोलन की सफलता नेतृत्व पर आधारित है। नेतृत्व आन्दोलन के उद्देश्य को स्पष्ट करता है तथा आन्दोलन के लिए दिशा का निर्देशन करता है।

(7) **श्रम विभाजन** (Division of Labour) – सामाजिक आन्दोलन में विशाल जनसमूह भाग लेता है। यह विशाल जनसमूह श्रम-विभाजन के आधार पर व्यवस्थित रहता है। सभी सदस्यों के कार्यों का विभाजन होता है तथा सभी सदस्य अपने कार्यों को करते हैं। कार्यों का विभाजन इसलिए किया जाता है कि जिससे कोई भी कार्य अधूरा न रहे। श्रम-विभाजन के अभाव में सामाजिक आन्दोलन सफल नहीं हो सकता है। श्रम-विभाजन सामाजिक आन्दोलन की रीढ़ है जिसके आभाव में उद्देश्य की पूर्ति नहीं की जा सकती है।

(8) **सामाजिक नियम** (Social Rules) – जैसा कि लिखा गया है कि सामाजिक आन्दोलन कुछ मूल्यों पर आधारित होता है। इन मूल्यों की प्राप्ति के लिए कुछ नियमों का निर्माण किया जाता है। ये नियम लिखित अथवा अलिखित दोनों प्रकार के हो सकते हैं। इन्हें ही सामाजिक नियम कहा जाता है। सामाजिक नियम बदलते रहते हैं क्योंकि समाज के मूल्य परिवर्तनशील हैं। सामाजिक आन्दोलन में सदस्यों के व्यवहार इन्हीं नियमों पर आधारित होते हैं।

(9) **प्रथा और परम्परा** (Custom and Traditions) – सामाजिक आन्दोलन के सम्पादन में प्रथाओं और परम्पराओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामाजिक आन्दोलन की सफलता के लिए प्रथाओं और परम्पराओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

(10) **निरन्तरता** (Continuty) – सामाजिक आन्दोलन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें निरन्तरता पायी जाती है। इसका कारण यह है कि समाज परिवर्तनशील है। इसी परिवर्तन के कारण सामाजिक आन्दोलन में भी निरन्तरता पायी जाती है।

(11) **सामान्य हित** (Common Goal) – सामाजिक आन्दोलन का सफल संचालन सामान्य हित की भावना के अभाव में नहीं किया जा सकता है। इसमें कोई समस्या अथवा विषय पर सदस्यों की सामान्य रुचि होती है तथा उनका सामान्य हित निहित होता है। सामान्य हित के कारण ही लोग संगठित होते हैं तथा आन्दोलन को गति मिलती है।

(12) **प्रेरणा** (Motivation) – सामाजिक आन्दोलन की सफलता के लिए प्रेरणा स्रोत का होना भी अनिवार्य है। हित के प्रति लोगों को जाग्रत करना तथा सफलता के लिए प्रेरित करने पर ही एक सामाजिक आन्दोलन आधारित रहता है।

(13) **निश्चित उद्देश्य** (Definite Aim) – सामाजिक आन्दोलन का एक निश्चित उद्देश्य होता है। सभी सदस्य इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संगठित प्रयास करते हैं। लक्ष्य के अभाव में कोई भी आन्दोलन सफल नहीं हो सकता है।

(14) **अन्य विशेषताएँ** – सामाजिक आन्दोलन की जिन विशेषताओं को ऊपर लिखा गया है, उनके अतिरिक्त कुछ और विशेषताएँ हैं जो इस प्रकार हैं–

(अ) सामूहिक प्रयास,

(आ) सदस्यों की सक्रिय सहभागिता,

(इ) एक निश्चित वैचारिकी,

(ई) नेतृत्व तथा अनुयायियों में सहसम्बन्ध,

(उ) गतिशील प्रकृति,

(ऊ) सफलता या असफलता आदि।

सामाजिक आन्दोलन का महत्व (Importance of Social Movement)

यहाँ मौलिक प्रश्न यह है कि सामाजिक आन्दोलन का क्या महत्व है ? सामाजिक आन्दोलन का अध्ययन क्यों किया जाता है ? सामाजिक आन्दोलन का अध्ययन निम्न दो बिन्दुओं के आधार पर किया जाता है–

प्रथम – सामाजिक आन्दोलन परिवर्तन की दिशा का बोध कराता है तथा

द्वितीय – सामाजिक आन्दोलन समाज की बुराइयों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है।

सामाजिक आन्दोलन के महत्व को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है–

(1) सामाजिक आन्दोलन समाज में परिवर्तन की गति और दिशा का बोध कराने में सहायता करना है।

(2) सामाजिक परिवर्तन की मात्रा और दर की माप करने में भी सामाजिक आन्दोलन की महत्वपूर्ण भूमिका है।

(3) सामाजिक आन्दोलन के द्वारा व्यक्ति अपनी इच्छा और आकांक्षा को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं।

(4) सामाजिक आन्दोलन समाज की भावी निर्माण की योजना प्रस्तुत करता है तथा उसकी आधारशिला रखता है।

(5) सामाजिक आन्दोलन जनता में अपने हितों के प्रति चेतना को विकसित करते हैं।

(6) सामाजिक आन्दोलन की सहायता से नई पीढ़ी अपनी विरासत (Heritage) का पुनर्मूल्यांकन करती है तथा उन्हें गुण-दोषों के आधार पर अपनाने का प्रयास करती है।

(7) सामाजिक आन्दोलन मानव सभ्यता के विकास का आधार है।

सामाजिक आन्दोलन के स्तर
(Stages of Social Movement)

सामाजिक आन्दोलन के अनेक स्तर होते हैं। डासन और गेटिस ने सामाजिक आन्दोलन के स्तरों को निम्न 4 भागों में विभाजित किया है–

(1) **सामाजिक अशान्ति का स्तर** (Social Unrest) – यह सामाजिक आन्दोलन की पहली अवस्था है। इसका प्रारम्भ अशांति से होता है। इस स्तर में लोग यह निश्चित नहीं कर पाते हैं कि वास्तव में उन्हें क्या करना है ? समाज का सारा वातावरण अनिश्चित और असामान्य रहता है। इस कारण लोग बेचैनी और घुटन की अनुभूति करते हैं। उन्हें जो भी सुझाव दिये जाते हैं, उनका पालन नहीं करते हैं। यह प्रथम स्तर बहुत ही अनिश्चित स्तर का होता है। यही कारण है कि व्यक्ति इस स्तर में किसी भी प्रकार का व्यवहार कर सकता है।

Login | Register

Kopykitab
Same textbooks, klick away

Search by Title / Author / ISBN / Descri

PRODUCT NOT FOUND!

Product not found!

continue

School Books

Oswaal Books
Class 9th Books
Class 10th Books
Class 11th Books
Class 12th Books

Engineering Books

RGPV Books & Notes
VTU Books & Notes
Free Engineering Books
Information Technology Books
Electrical Engineering Books

Competitive Exams

Bank PO Exam

Gate Books
Teaching Exams Books
AIEEE-NIT-JEE MAINS Books
UPSC Books

Professional Courses

ICSI Books & Study Materials
Chartered Accountant Books
Company Secretary Books
ICSI 7 days Trial
Latest Scanners

About KopyKitab.com

Kopykitab is India's 1st digital & multiple publishers platform. Kopykitab has largest collection of e-textbooks & branded digital content in Higher & School education. We have strong foundation of leading publishers & tutorials as content partners.

We offer e-textbook, Test Preparation, Notes & LMS for various curriculam to Students, Professionals & Institutes. These are same textbooks, way smarter. Our goal is to make education affordable & accessible.
A user can access the content in all electronic devices e.g. Mobile, PC & Tabs

Information

About Us
FAQ
Privacy Policy
Terms & Conditions
Payment Information

Links

ICSI eLibrary
KopyKitab eBook Reader
Contact Us
Site Map

My Account

Refer & Earn
My Account
Order History
Wish List
Newsletter
My Library
Office 365 Email Login
Google Login

Verified By

©2016 DigiBook Technologies (P) Ltd, All Rights Reserved. An ISO 9001:2008 Certified Company